भारत में सामाजिक पहचान एवं संरचनात्मक बदलाव

आजादी के बाद से 75 वर्षों के दौरान भारत ने लगभग हर सामाजिक-आर्थिक संकेतक में काफी प्रगति हासिल की है। ऐसे में हमारा यह दायित्व बन गया है कि हम इस प्रगति को और आगे बढ़ाएं तथा एक ऐसे समाज का निर्माण करें जो न केवल समृद्ध हो, बल्कि न्यायसंगत एवं संधारणीय भी हो। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों की तीव्र आर्थिक संवृद्धि के बावजूद, भारत में संरचनात्मक बदलाव की गति काफी धीमी रही है। किसी व्यक्ति की सामाजिक पहचान उसके लिए अवसरों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह स्थिति हमारे समाज की मौजूदा समस्याओं, जैसे- बेरोजगारी और असमानता को और गंभीर बना देती है।

इस डॉक्यूमेंट में हम निम्नलिखित पर चर्चा करेंगे:

1. सामाजिक पहचान का क्या अर्थ है? 2
2. संरचनात्मक बदलाव का क्या अर्थ है? 2
   2.1. संरचनात्मक बदलाव के मुख्य घटक कौन-कौन से हैं? 2
   2.2. संरचनात्मक बदलाव को कैसे हासिल किया जा सकता है? 3
3. सामाजिक पहचान और संरचनात्मक बदलाव के बीच क्या संबंध है? 5
4. संरचनात्मक बदलाव ने कैसे मौजूदा सामाजिक असमानताओं को प्रभावित किया है? 6
   4.1. महिला रोजगार और संरचनात्मक बदलाव के बीच क्या संबंध रहा है? 6
5. आगे की राह 7

निष्कर्ष 7

टॉपिक: एक नज़र में 8

बॉक्स, चित्र और टेबल 9

1. सामाजिक पहचान (Social Identities) का क्या अर्थ है?

कोई व्यक्ति अपनी पहचान व्यक्तिगत पहचान या सामूहिक रूप से सामाजिक पहचान के आधार पर तय कर सकता है।
व्यक्तिगत पहचान में लोग स्वयं को एकल व्यक्ति (मैं) के रूप में परिभाषित करते हैं, जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से अलग करती है। व्यक्तिगत पहचान को तय करने वाले तत्व किसी व्यक्ति के संपूर्ण जीवन को भी निर्धारित करते हैं, जैसे- टीम भावना, किसी खास प्रकार के संगीत में रूचि, जीवन-शैली आदि।

किसी व्यक्ति की सामाजिक पहचान समाज में उसकी सामूहिक भूमिका (हम) के आधार पर तय होती है। यह आधार आम तौर जन्मजात ही होते हैं।

टेबल 1.1. सामाजिक पहचान के प्रकार और उदाहरण

सामाजिक पहचान	परिभाषा	पहचान के उदाहरण
जाति	सामाजिक और धार्मिक मानदंडों के आधार पर प्राचीन समय से व्याप्त समाज का विभाजन।	ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अस्पृश्य
नस्ल	इसका निर्धारण सामाजिक रूप से होता है। किसी व्यक्ति की शारीरिक लक्षणों, जैसे- शारीरिक संरचना, कद और त्वचा, बाल या आंखों के रंग आदि से नस्ल का निर्धारण होता है।	वाइट मैन, ब्लैक मैन, निग्रिटो, मंगोलॉयड आदि
जेंडर	व्यक्ति के जेंडर का निर्धारण जन्मजात जनन अंगों के आधार पर करना।	पुरुष, महिला, ट्रांसजेंडर, इंटरसेक्स आदि
सेक्सुअल ओरिएंटेशन	किसी व्यक्ति की पहचान उसके किसी जेंडर या जेंडर्स के प्रति यौन आकर्षण के आधार पर की जाती है।	हेट्रोसेक्सुअल, होमोसेक्सुअल, लेस्बियन, बाइसेक्सुअल, असेक्सुअल
नृजातीयता	इसमें क्षेत्रीय संस्कृति, मूलवंश, सगोत्र संबंध और भाषा सहित सांस्कृतिक कारक शामिल होते हैं।	इंडो-आर्यन, द्रविड़, बंगाली, मराठी
सामाजिक वर्ग	सामाजिक और आर्थिक स्थिति के आधार पर समाज का विभाजन।	उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न मध्यम वर्ग, निर्धन व्यक्ति

2. संरचनात्मक बदलाव (Structural Transformation) का क्या अर्थ है?

किसी अर्थव्यवस्था का **निम्न उत्पादकता तथा श्रम-गहन आर्थिक गतिविधियों से उच्च उत्पादकता, पूंजी और कौशल-गहन गतिविधियों में बदलाव** को संरचनात्मक परिवर्तन कहते हैं।

2.1. संरचनात्मक बदलाव के मुख्य घटक कौन-कौन से हैं?

- **कृषि से स्थानांतरण:** इस प्रक्रिया में किसी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के संसाधन (श्रम, पूंजी और प्रौद्योगिकी) **कम उत्पादकता वाली प्राथमिक गतिविधियों से आधुनिक, उच्च उत्पादकता वाले क्षेत्रकों में स्थानांतरित** हो जाते हैं।
  - यह सकल घरेलू उत्पाद और रोजगार में **कृषि क्षेत्रक की घटती हिस्सेदारी** से स्पष्ट होता है।
- **विभिन्न क्षेत्रकों की हिस्सेदारी:** इसके तहत अर्थव्यवस्था में विनिर्माण और सेवा क्षेत्रक की हिस्सेदारी के आधार पर एक आधुनिक अर्थव्यवस्था का उदय होता है।
  - इसे आम तौर पर विभिन्न क्षेत्रकों में **रोजगार के वितरण, मूल्य वर्धन के वितरण और अंतिम उपभोग व्यय के वितरण** के जरिए मापा जाता है।
- **पूंजी संचयन:** इसमें **भौतिक और मानव पूंजी** का संचयन एवं मांग, उत्पादन, रोजगार तथा व्यापार संरचना में बदलाव शामिल है।
- **प्रवासन:** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विकास में अंतर के चलते ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवासन होता है।
- **जनसांख्यिकीय बदलाव:** जब समाज विकसित होकर ग्रामीण से शहरी परिवेश की ओर बढ़ता है, तब उसकी जनसांख्यिकी में बदलाव आता है। ऐसे में, बेहतर स्वास्थ्य स्थितियों के कारण कम विकसित क्षेत्रों की जन्म और मृत्यु दर दोनों कम हो जाते हैं।

बॉक्स 2.1. इन संकेतकों पर भारत की स्थिति

- **रोजगार का वितरणः** 1980 के दशक से ठहराव की स्थिति (Stagnating) के बाद, 2004 में **नियमित वेतन या वेतनभोगी श्रमिकों की हिस्सेदारी में वृद्धि** हुई। यह पुरुषों के लिए 18% से बढ़कर 25% और महिलाओं के लिए 10% से बढ़कर 25% हो गई है।
  - इसके साथ ही **कृषि आधारित रोजगार में भी गिरावट** आयी है।
- **औपचारिक अर्थव्यवस्था की उपस्थितिः** 1983 और 2019 के बीच, रोजगार में गैर-कृषि क्षेत्रक की हिस्सेदारी 20% बढ़ी है। हालांकि, इसमें अधिकांश नौकरियां अनौपचारिक प्रकृति की ही थीं।
- **विनिर्माण क्षेत्रक का हिस्साः** विनिर्माण क्षेत्रक सकल घरेलू उत्पाद या रोजगार प्रदान करने में अपना योगदान देने में विफल रहा है।
- **सेवा क्षेत्रक का विकासः सेवा क्षेत्रक ने अर्थव्यवस्था में काफी योगदान** दिया है।
- **रोजगार सृजनः** 1990 के दशक से, साल-दर-साल **गैर-कृषि जी.डी.पी. वृद्धि और गैर-कृषि रोजगार वृद्धि का एक दुसरे से कोई तालमेल नहीं** रहा है। इससे पता चलता है कि यह जरूरी नहीं कि तीव्र आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने वाली नीतियां **रोजगार सृजन को भी बढ़ावा देती हो।**
  - हालांकि, 2004 और 2019 के बीच देखा गया कि औसत वृद्धि ने रोजगार सृजन में बढ़ावा दिया था, जो वैश्विक महामारी के कारण बाधित हो गया।

चित्र 2.1. भारत में संरचनात्मक बदलाव

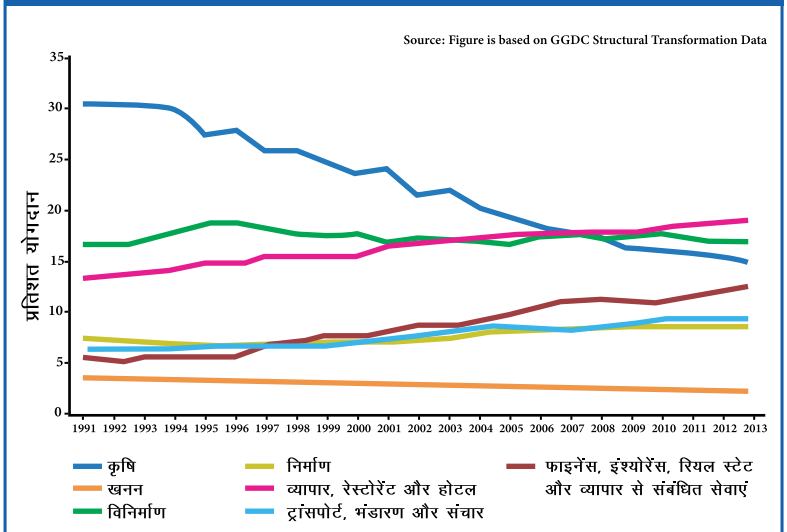

2.2. संरचनात्मक बदलाव को कैसे हासिल किया जा सकता है?

- **आर्थिक गतिविधियों का विविधीकरणः** नए उद्योगों और क्षेत्रकों के विकास को बढ़ावा देकर विविधीकरण को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।
- **मानव पूंजी में निवेशः** अत्यधिक कुशल और सक्षम कार्यबल के निर्माण के लिए शिक्षा एवं कौशल विकास कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।
- **अवसंरचना विकासः** बेहतर अवसंरचना के जरिए उत्पादन लागत को कम किया जा सकता है, व्यापार को सुगम बनाया जा सकता है और निवेश को आकर्षित किया जा सकता है। इससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।
- **प्रौद्योगिकी अपनानाः** ऐसी संस्थाएं और नीतियां तैयार की जानी चाहिए जो किसी अर्थव्यवस्था के आउटपुट को बदलने के लिए प्रौद्योगिकियों और नवाचारों के विकास, उन्हें अपनाने तथा उनके उपयोग को बढ़ावा देती हों।
- **वित्त तक पहुंचः** व्यवसायों, विशेष रूप से लघु और मध्यम उद्यमों (SMEs) की वित्त तक पहुंच सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए।
- **व्यापार नीतियांः** ऐसी व्यापार नीतियां बनाने और लागू करने की जरूरत है जो अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा और विशेषज्ञता को बढ़ावा देते हुए नए बाजारों तक पहुंच में सुधार करती हों।
- **ज्ञानः** मौजूदा दौर में ज्ञान एक ऐसे कारक के रूप में उभरा है, जो सार्थक संरचनात्मक बदलाव ला सकता है।

संरचनात्मक बदलाव का महत्त्व

- उच्च उत्पादकता तथा उसमें और वृद्धि
- प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि और बढ़ता जीवन स्तर
- आर्थिक संरचना में अधिक विविधता
- गरीबी और बाहरी आघातों के प्रति लचीलापन

बॉक्स 2.2. एक छोटी सी वार्ता: आर्थिक संवृद्धि और संरचनात्मक परिवर्तन का अंतर्संबंध

विनय

अरे विनय, क्या तुम जानते हो कि आर्थिक संवृद्धि और संरचनात्मक बदलाव आपस में जुड़े हुए हैं?

सचमुच? कैसे?

देखो, जैसे-जैसे कोई देश आर्थिक रूप से आगे बढ़ता है, वैसे-वैसे उसके उद्योग और क्षेत्रकों में भी बदलाव होता है। इसे संरचनात्मक बदलाव कहते है। यह ऐसा है जैसे कृषि से विनिर्माण और फिर सेवा क्षेत्रक की ओर आगे बढ़ना।

अच्छा, मैं समझ गया! तो, जैसे-जैसे लोग इन नए क्षेत्रकों में बेहतर नौकरियों की ओर बढ़ते जाते हैं, उससे अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिलता है, है ना?

बिल्कुल ठीक कहा! और अधिक निवेश तथा प्रौद्योगिकी के साथ, ये क्षेत्रक अधिक उत्पादक एवं कुशल बनते जाते हैं, जिससे आर्थिक संवृद्धि में और भी बढ़ोतरी होती है।

तो, यह एक चक्र की तरह है! लेकिन क्या यह हमेशा सुगम रूप से चलता रहता है?

हमेशा नहीं! कभी-कभी, अगर इसे सही तरह से प्रबंधित नहीं किया जाता है, तो यह बेरोजगारी या असमानता जैसी समस्याओं को जन्म दे सकता है। इसलिए इस बदलाव को दिशा देने के लिए बेहतर नीतियां बनाना बहुत जरूरी हो जाता है।

समझ गया! इसलिए, हमारे देश को आगे बढ़ते रहने के लिए, आर्थिक संवृद्धि और संरचनात्मक बदलाव दोनों को साथ-साथ चलने की जरूरत है।

बिल्कुल सही! और यह हर किसी के लिए बेहतर अवसर और जीवन की उच्च गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक भी है।

3. सामाजिक पहचान (Social Identities) और संरचनात्मक बदलाव के बीच क्या संबंध है?

- **दोहरा संबंध (Dual Relationship):**
  - **संरचनात्मक बदलाव से नए अवसर पैदा होते हैं।** इन अवसरों का लाभ उठाने में किसी व्यक्ति की लैंगिक, जातीय, धार्मिक या नृजातीय पहचान महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
  - इसके विपरीत, **पहले से चले आ रहे सामाजिक मानदंड और पदानुक्रम** (Hierarchies) किसी देश के संरचनात्मक बदलाव की प्रकृति को निर्धारित करने में भूमिका निभाते हैं।
  - उदाहरण के लिए-
    - **पितृसत्तात्मक मानदंड:** ये मानदंड महिलाओं को रोजगार के लिए घर से बाहर निकलने से रोककर नई नौकरियों का लाभ उठाने से रोक सकते हैं।
    - साथ ही, पितृसत्तात्मक मानदंडों के कारण **श्रम आपूर्ति बदल** जाती है। इससे अर्थव्यवस्था में श्रम, पूंजी की उपलब्धता तथा उद्योगों की विविधता प्रभावित होती हैं।
- **असमानता और हाशियाकरण (Inequality and Marginalization):** संरचनात्मक बदलाव का अलग-अलग सामाजिक समूहों पर अलग-अलग प्रभाव पड़ सकता है।
  - **उदाहरण के लिए-** जनजातीय आबादी जैसे हाशिए पर मौजूद कुछ समूहों के लिए अर्थव्यवस्था में होने वाले बदलावों के अनुकूल ढलना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इससे धन, आय और रोजगार के अवसरों में असमानता को बढ़ावा मिलता है।
- **राजनीतिक शक्ति:** सामाजिक पहचान अक्सर ताकत से जुड़ी होती है, जो व्यक्तियों या समूहों की संसाधनों, अवसरों तक पहुंच एवं निर्णय लेने की क्षमता को भी प्रभावित करती है। संरचनात्मक बदलाव या तो मौजूदा शक्ति असंतुलन को मजबूत करता है अथवा हाशिए पर मौजूद समूहों को शक्ति असंतुलन को चुनौती देने एवं इसमें बदलाव करने का अवसर भी पैदा कर सकता है।
- **श्रम बाजार में बदलाव (Labour Market Dynamics):** अर्थव्यवस्था में ऑटोमेशन या वैश्वीकरण जैसे परिवर्तन कुछ प्रकार के श्रम की मांग में कमी या बदलाव ला सकते हैं। कौशल के स्तर, शिक्षा और भेदभाव के ऐतिहासिक स्वरूप जैसे कारकों के आधार पर यह विभिन्न सामाजिक वर्गों को अलग-अलग तरीके से प्रभावित कर सकता है।
- **सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव:** आर्थिक परिवर्तन अक्सर सांस्कृतिक मानदंडों और सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन लाते हैं।
  - उदाहरण के लिए- पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएं या सांस्कृतिक प्रथाएं या तो आर्थिक परिवर्तनों के अनुकूल ढल जाती हैं या उनका विरोध करती हैं। इस प्रकार आर्थिक परिवर्तन, समग्र सामाजिक नजरिए में बदलाव करता है।
- **सामाजिक आंदोलन:** आर्थिक न्याय और संरचनात्मक बदलावों की मांग करने वाले सामाजिक आंदोलनों एवं सक्रियता के पीछे सामाजिक पहचान एक प्रेरक शक्ति हो सकती है।

बॉक्स 3.1. उभरती तकनीकें तथा जातीय एवं अन्य सामाजिक पहचान

भारत की जाति-आधारित भेदभाव व्यवस्था का प्रभाव ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी देखा जा सकता है, जो निम्नलिखित से स्पष्ट होता है:

- वंचित जातीय समूहों और अन्य वर्गों के बीच डिजिटल विभाजन बढ़ रहा है, जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली तथा आर्थिक अवसरों में मौजूदा अंतराल बढ़ता है।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और अन्य उभरती प्रौद्योगिकियों के एल्गोरिदम पूर्वाग्रहों में सामाजिक असमानताएं देखने को मिलती हैं।
- प्रौद्योगिकी आधारित कार्यबल में हाशिए पर मौजूद जातीय समूहों का प्रतिनिधित्व कम है।
- सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के जरिए मार्केटिंग और विज्ञापन में रूढ़िवादिता एवं भेदभावपूर्ण प्रथाओं को बढ़ावा मिलता है।
- हाशिए पर मौजूद जातीय समूहों से संबंधित व्यक्तियों की **निजता** और **प्रोफाइलिंग से जुड़े मुद्दे** देखने को मिलते हैं।

उभरती प्रौद्योगिकियां निम्नलिखित के जरिए जातिगत असमानताओं को दूर करने में प्रभावी भूमिका निभा सकती हैं:

- डिजिटल विभाजन को समाप्त करने हेतु सस्ती और सुलभ प्रौद्योगिकी अवसंरचना प्रदान की जा सकती है।
- AI जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों के लिए एल्गोरिदम और प्रशिक्षण देने वाले डेटासेट में निष्पक्षता एवं तटस्थता सुनिश्चित की जा सकती है।
- हाशिये पर मौजूद जातीय समूहों की राजनीतिक लामबंदी, उनका सामुदायिक सशक्तीकरण और उनमें सामाजिक जागरूकता का प्रसार किया जा सकता है।
- वित्तीय संसाधनों का विविधीकरण और शैक्षिक, स्वास्थ्य देखभाल और कौशल प्रशिक्षण संसाधनों तक पहुंच में सुधार किया जा सकता है।

4. संरचनात्मक बदलाव ने कैसे मौजूदा सामाजिक असमानताओं को प्रभावित किया है?

संरचनात्मक बदलाव और सामाजिक असमानताओं के बीच जटिल तथा बहुआयामी संबंध होता है।

सकारात्मक प्रभाव

- **सकारात्मक संरचनात्मक बदलाव (Increase in upward mobility):** 2004 और 2018 के बीच, श्रमिकों की भागीदारी अनौपचारिक रोजगार से नियमित वेतनभोगी नौकरियों की ओर बढ़ी है।
  - 2004 में अनौपचारिक वेतन-भोगी श्रमिकों की 80% से अधिक संतानें अनौपचारिक रोजगार में संलग्न थीं। गैर-एस.सी./एस.टी. जातियों के मामले में, यह 2018 तक 83% से घटकर 53% हो गया, जबकि एस.सी./एस.टी. जातियों के मामले में यह 86% से मामूली रूप से कम होकर 76% हो गया।
- **जाति-आधारित अलगाव में कमी:** 1983 और 2021 के बीच जाति-आधारित पेशे को अपनाने की प्रवृत्ति में कमी देखी गई।
  - 1980 के दशक की शुरुआत में, अनुसूचित जाति के व्यक्ति वर्तमान की तुलना में अपशिष्ट एवं सीवेज से संबंधित कार्यों में 5 गुना तथा चमड़े से संबंधित कार्यों में 4 गुना अधिक लगे थे। सरकार द्वारा इस विषय पर कानून बनाने से समय के साथ इन कुप्रथाओं में गिरावट जरूर आई है, लेकिन 2021-22 तक भी इन कई कुप्रथाओं को पूर्ण रूप से समाप्त नहीं किया जा सका है।

नकारात्मक प्रभाव

- **कम वेतन वाली नौकरियों में अधिक प्रतिनिधित्व:** संरचनात्मक बदलावों के बावजूद कम वेतन वाले पेशों में हाशिए के समूह का अधिक प्रतिनिधित्व देखने को मिलता है।
  - उदाहरण के लिए- अन्य समूह की तुलना में अनुसूचित जाति के लोगों के **अनौपचारिक रोजगार में शामिल होने की संभावना कहीं अधिक** होती है।
- **निम्नतर जातियों के उद्यमी: 20 से अधिक श्रमिकों को रोजगार देने वाली फर्मों** में एस.सी. और एस.टी. वर्गों से संबंधित मालिकों का **प्रतिनिधित्व अत्यधिक कम** है। इसी प्रकार, बड़े आकार के फार्मों के मामले में उच्चतर जातियों से संबंधित मालिकों का प्रतिनिधित्व भी बढ़ता जाता है।
- **क्षेत्रक आधारित संरचना और रोजगार:** उच्च जाति के लोग विभिन्न क्षेत्रकों में विविध प्रकार की नौकरियों में कार्यरत हैं और वे इन नौकरियों में होने वाले परिवर्तनों से सबसे अधिक लाभ उठाते हैं।
  - **निम्नतर जाति समूहों के मामले में स्वरोजगार में संलग्न व्यक्तियों के अनुपात में गिरावट की गति धीमी** रही है।

4.1. महिला रोजगार और संरचनात्मक बदलाव के बीच क्या संबंध रहा है?

सकारात्मक संबंध

- **U-आकार का संबंध:** महिलाओं की रोजगार में भागीदारी और आर्थिक विकास के बीच U-आकार का संबंध देखने को मिलता है।
  - संरचनात्मक बदलाव के चलते कृषि में महिलाओं के श्रम की मांग कम होने के कारण **महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी कम हो जाती है।** हालांकि, जैसे-जैसे आर्थिक संवृद्धि जारी रहती है और महिलाओं में शिक्षा का स्तर बढ़ता जाता है वैसे-वैसे रोजगार के नए अवसर एवं उच्च वेतन वाली नौकरियों के चलते कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने लगती है।
- **जेंडर आधारित मानदंड:** महिलाओं की स्वायत्तता से संबंधित **प्रगतिशील मानदंड,** रोजगार के अवसरों में उनकी भागीदारी की संभावना को बढ़ाने में मदद करते हैं।
- **आय में जेंडर आधारित अंतर:** जेंडर के आधार पर आय में असमानता समय के साथ-साथ कम हुई है, लेकिन यह अभी भी **जाति या धर्म-आधारित असमानता की तुलना में कहीं अधिक** है।
  - स्व-रोजगार और एस.सी./एस.टी. समुदाय की महिला श्रमिकों के मामले में आय-असमानता सबसे अधिक है।
- **नियमित वेतन वाले रोजगार में वृद्धि:** नियमित वेतन वाली नौकरियां में संलग्न महिला श्रमिकों का अनुपात काफी बढ़ा है। यह 2004 में केवल 10% था, जो 2018 में बढ़कर 25% हो गया है।

नकारात्मक संबंध

- **ग्रामीण महिलाओं की 'श्रम बल भागीदारी दर'(LFPR) में गिरावट:** LFPR में गिरावट के लिए दो प्रमुख कारकों की पहचान की गई है। पहला, मशीनीकरण के कारण महिला श्रमिकों का विस्थापन हुआ है और दूसरा, परिवार की बढ़ती आय के साथ-साथ सामाजिक मानदंड बदले हैं। इन मानदंडों के तहत महिलाओं के सवैतनिक काम की तुलना में अवैतनिक घरेलू काम को अधिक महत्व दिया जाता है।
- **जेंडर आधारित मानदंड:** एक प्रचलित जेंडर मानदंड यह है कि **"पुरुष कमाने वाला (Male breadwinner)"** होता है। अर्थात, कमाने की प्राथमिक जिम्मेदारी पतियों की होती है और पत्नियां केवल आवश्यकता पड़ने पर ही होने पर ही परिवार की आय में योगदान देती हैं।
  - आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) डेटा से पता चलता है कि जिन घरों में पति की कमाई अधिक है, वहां **कार्यबल में पत्नी की भागीदारी की संभावना कम** होती है।
- **रोजगार विहीन संवृद्धि (Jobless Growth):** इसके तहत महिलाएं कार्यबल से बाहर हो जाती हैं। साथ ही, इससे महिला बेरोजगारी दर बढ़ जाती है या उन्हें कम आय वाले अनौपचारिक श्रम में नियोजित होने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

5. आगे की राह

- **नीतिगत हस्तक्षेपः** सरकारें और संस्थाएं सामाजिक पहचान तथा आर्थिक बदलाव के बीच के संबंधों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
  - भेदभाव को कम करने और समान अवसरों को बढ़ावा देने वाली नीतियां हाशिए पर मौजूद वर्गों पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को कम करने तथा अधिक समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में मदद कर सकती हैं।
- **सामाजिक सुरक्षा प्रदान करनाः** वंचित आबादी पर संरचनात्मक बदलाव के संभावित नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने से संबंधित कार्यक्रम लागू किया जाना चाहिए।
  - इसमें बेरोजगारी भत्ता, कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम और अन्य सहायता तंत्र शामिल किए जा सकते हैं।
  - उदाहरण के लिए- **नॉर्डिक देश** आय या आर्थिक मानदंडों को नजरअंदाज करते हुए **नागरिकों को समावेशी सामाजिक सेवाओं तक किफायती पहुंच प्रदान करते हैं।**
- **क्षेत्रीय विकासः** संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि संरचनात्मक बदलाव का लाभ विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में समान रूप से हो। इससे क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।
  - उदाहरण के लिए- **जर्मनी के बावेरिया क्षेत्र** के विकास के लिए शहरी नेटवर्क, नवीन परिवेश और क्षेत्रीय विपणन जैसे लचीले साधनों को रणनीति के रूप में अपनाया गया है।
- **निगरानीः** संरचनात्मक परिवर्तनों से संबंधित पहलों की प्रगति की निगरानी और मूल्यांकन करने के लिए एक तंत्र स्थापित करना चाहिए। नियमित मूल्यांकन करने से नीति निर्माताओं को तथ्यों पर आधारित निर्णय लेने और आवश्यकतानुसार रणनीतियों में बदलाव करने में मदद मिल सकती है
  - उदाहरण के लिए- **भारत की PRAGATI पहल** भारत सरकार के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों की निगरानी और समीक्षा करती है।
- **ज्ञान तक समान पहुंचः** शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निवेश किया जाना चाहिए। यह समाज के सभी वर्गों के लिए समान अवसर प्रदान करेगा।
  - उदाहरण के लिए- **इज़राइल में सामुदायिक एकीकृत शिक्षा मॉडल** विशेष जरूरतों वाले बच्चों के लिए शिक्षा को बढ़ावा देता है।
- **लैंगिक समानता से संबंधित नीतियांः** कार्यबल में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने वाली नीतियों को लागू करना चाहिए। अधिक समावेशी अर्थव्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए रोजगार, वेतन और अन्य अवसरों में लैंगिक असमानताओं का समाधान करना आवश्यक है।
  - भारत का **स्वयं सहायता समूह (SHG) आंदोलन** हाशिए पर मौजूद महिलाओं के जीवन में बदलाव ला रहा है।
- **वित्तीय समावेशनः** प्रौद्योगिकी और वित्तीय नेटवर्क के विस्तार के जरिए समाज के सभी वर्गों तक बैंकिंग सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित करके वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
  - उदाहरण के लिए- भारत सरकार का **JAM ट्रिनिटी (जनधन योजना, आधार और मोबाइल) कार्यक्रम।**

निष्कर्ष

"आर्थिक संरचना उस सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ से स्वतंत्र नहीं है जिसमें यह अंतर्निहित है। इस प्रकार, अर्थव्यवस्था में किसी भी सार्थक परिवर्तन के साथ-साथ सामाजिक पहचान (Social Identity) में भी बदलाव होना चाहिए।" -अमर्त्य सेन

टॉपिक - एक नजर में

भारत में सामाजिक पहचान एवं संरचनात्मक बदलाव

किसी व्यक्ति की सामाजिक पहचान समाज में उसकी सामूहिक भूमिका (हम) के आधार पर तय होती है। यह आधार आम तौर जन्मजात ही होते हैं। उदाहरण के लिए- सामाजिक पहचान जाति, नस्ल, जेंडर आदि पर आधारित होती है।

किसी अर्थव्यवस्था का **निम्न उत्पादकता तथा श्रम-गहन आर्थिक गतिविधियों से उच्च उत्पादकता, पूंजी और कौशल-गहन गतिविधियों में बदलाव** को संरचनात्मक परिवर्तन कहते हैं।

सामाजिक पहचान (Social Identities) और संरचनात्मक बदलाव के बीच संबंध

- **दोहरा संबंध (Dual Relationship): इसमें संरचनात्मक बदलाव से नए अवसर पैदा होते हैं,** जबकि इन अवसरों का लाभ उठाने में सामाजिक पहचान महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- असमान संरचनात्मक बदलाव के कारण कुछ सामाजिक समूहों में **असमानता और हाशियाकरण बढ़ता** है।
- संरचनात्मक बदलाव या तो **मौजूदा शक्ति असंतुलन को मजबूत करता है** अथवा हाशिए पर मौजूद समूहों को शक्ति असंतुलन में बदलाव करने का अवसर भी पैदा कर सकता है।
- **श्रम बाजार में बदलाव (Labour Market Dynamics):** अर्थव्यवस्था में ऑटोमेशन या वैश्वीकरण जैसे परिवर्तन कुछ प्रकार के श्रम की मांग में कमी या बदलाव ला सकते हैं। कौशल के स्तर, शिक्षा और भेदभाव के ऐतिहासिक स्वरूप जैसे कारकों के आधार पर यह विभिन्न सामाजिक वर्गों को अलग-अलग तरीके से प्रभावित कर सकता है।
- संरचनात्मक बदलाव अक्सर **सांस्कृतिक मानदंडों, सामाजिक संरचनाओं और आर्थिक अवसरों** में परिवर्तन लाते हैं।
- सामाजिक पहचान ऐसे **सामाजिक आंदोलनों** के पीछे एक प्रेरक शक्ति हो सकती है, जो समाज में व्यापक संरचनात्मक बदलाव लाए।

मौजूदा सामाजिक असमानताओं पर संरचनात्मक बदलाव का प्रभाव

- **सकारात्मक प्रभावों में शामिल हैं:**
  - रोजगार की प्रवृति में परिवर्तन के कारण सकारात्मक संरचनात्मक बदलाव (Increase in upward mobility)।
  - जाति आधारित औद्योगिक श्रम अलगाव में कमी।
  - जेंडर आधारित आय असमानता में कमी।
- **नकारात्मक प्रभाव**
  - कम वेतन वाली नौकरियों में हाशिए के समूह का अधिक प्रतिनिधित्व।
  - किसी फर्म या उद्यम के स्वामित्व में निम्नतर जातियों का प्रतिनिधित्व अत्यधिक कम है।
  - विविध क्षेत्रकों की नौकरियों में निम्नतर जाति के समूहों का प्रतिनिधित्व कम है।

महिला रोजगार और संरचनात्मक बदलाव के बीच क्या संबंध रहा है?

- **सकारात्मक संबंध**
  - संरचनात्मक बदलाव के रूप में **U-आकार का संबंध** शुरू में महिलाओं को कार्यबल से बाहर धकेलता है लेकिन बाद में उन्हें कार्यबल में शामिल कर लेता है।
  - महिलाओं की स्वायत्तता से संबंधित **प्रगतिशील मानदंड,** रोजगार के अवसरों में उनकी भागीदारी की संभावना को बढ़ाने में मदद करते हैं।
  - **जेंडर के आधार पर आय में असमानता समय के साथ-साथ कम हुई है।**
- **नकारात्मक संबंध**
  - **ग्रामीण महिलाओं की 'श्रम बल भागीदारी दर'** (LFPR) में मशीनीकरण के कारण महिला श्रमिकों का विस्थापन और परिवार की बढ़ती आय के साथ-साथ सामाजिक मानदंड के चलते गिरावट आ रही हैं।
  - एक प्रचलित जेंडर मानदंड यह है कि **"पुरुष कमाने वाला (Male breadwinner)"** होता है। अर्थात, कमाने की प्राथमिक जिम्मेदारी पतियों की होती है।
  - **रोजगार विहीन संवृद्धि और कृषिगत रोजगार में गिरावट।**

आगे की राह

- भेदभाव का समाधान करने, समान अवसरों और समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने वाले **नीतिगत हस्तक्षेप** किए जाने चाहिए।
- वंचित आबादी पर संरचनात्मक बदलाव के संभावित नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए **सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने से संबंधित कार्यक्रम लागू किए जाने** चाहिए।
- **क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने के लिए संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना** चाहिए।
- संरचनात्मक बदलावों से संबंधित पहलों की प्रगति की निगरानी और मूल्यांकन करने के लिए एक तंत्र स्थापित करना चाहिए।
- **ज्ञान तक समान पहुंच सुनिश्चित करने के साथ-साथ** शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निवेश किया जाना चाहिए।
- **लैंगिक समानता और वंचित समूहों के वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने वाली नीतियों को लागू करना चाहिए।**

बॉक्स, चित्र और टेबल

बॉक्स 2.1. इन संकेतकों पर भारत की स्थिति 3

बॉक्स 2.2. एक छोटी सी वार्ताः आर्थिक संवृद्धि और संरचनात्मक परिवर्तन का अंतर्संबंध 4

बॉक्स 3.1. उभरती तकनीकें तथा जातीय एवं अन्य सामाजिक पहचान 5

चित्र 2.1. भारत में संरचनात्मक बदलाव 3

टेबल 1.1. सामाजिक पहचान के प्रकार और उदाहरण 2

39 in Top 50 Selection in CSE 2022

ISHITA KISHORE

GARIMA LOHIA

UMA HARATHI N

हिंदी माध्यम में 40+ चयन CSE 2022 में

= हिंदी माध्यम टॉपर =

KRITIKA MISHRA

BHARAT JAI PRAKASH MEENA

DIVYA

GAGAN SINGH MEENA

ANKIT KUMAR JAIN

8 in Top 10 Selection in CSE 2021

ANKITA AGARWAL

GAMINI SINGLA

AISHWARYA VERMA

UTKARSH DWIVEDI

YAKSH CHAUDHARY

SAMYAK S JAIN

ISHITA RATHI

PREETAM KUMAR

दिल्ली

HEAD OFFICE
Apsara Arcade, 1/8-B, 1st Floor, Near Gate-6, Karol Bagh Metro Station, Delhi

MUKHERJEE NAGAR CENTRE
Plot No. 857, Ground Floor, Mukherjee Nagar, Opposite Punjab & Sindh Bank, Mukherjee Nagar, Delhi

FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call:
+91 8468022022,
+91 9019066066

SHUBHAM KUMAR
CIVIL SERVICES EXAMINATION 2020

ENQUIRY@VISIONIAS.IN /VISION_IAS WWW.VISIONIAS.IN /C/VISIONIASDELHI VISION_IAS /VISIONIAS_UPSC

अहमदाबाद भोपाल चंडीगढ़ गुवाहाटी हैदराबाद जयपुर जोधपुर लखनऊ प्रयागराज पुणे राँची सीकर